पानी का बपतिस्मा

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

पानी के बपतिस्मे जैसे सरल सी बात को लेकर बहुत से विवाद और गलतफ़हमी हैं।

हमारी गलतफ़हमी की शुरुआत इस तथ्य के साथ होती है कि जब नए नियम का अनुवाद किया गया था, तब युनानी शब्द "बपतिस्मो" को वैसा का वैसा ही ले लिया। यदि उसका अनुवाद होता, तो ऐसा लिखा जाता : "रख देना या डाल देना", डूबा देना, या डूब जाना।"

जब भी बपतिस्मे का ज़िक्र आता है तो कई लोगों के मन में सबसे पहले पानी का विचार आता है। परन्तु पवित्र शास्त्र पढ़ते हुए, हमें इतनी जल्दी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहिए। उदाहरण के लिए :

लूका 12:50
मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है; और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी सकेती में रहूंगा?

यीशु यहां पानी के बपतिस्मे की बात नहीं कर रहे थे – उन्होंने पानी में बपतिस्मा तो पहले ही ले लिया था। वह **मृत्यु में डाल देने** की बात कर रहे थे।

मरकुस 10:38–39
यीशु न उन से कहा, तुम नहीं जानते, कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, क्या ले सकते हो? उन्हों ने उस से कहा, हम से हो सकता है: यीशु ने उन से कहा: जो कटोरा मैं पीने पर हूं, तुम पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, उसे लोगे।

जी हां, जितने विश्वास करते हैं उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेंगे। रोमियों 6:4 इसी की बात करता है। मृत्यु में डाल देना। पानी में नहीं! पानी का बपतिस्मा तो उसकी मृत्यु में डाले जाने का दृष्टान्त है।

रोमियों 6:4
सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

कुलुस्सियों 2:12 भी मृत्यु में उसके बपतिस्मे के विषय में बताती है न कि पानी में।
" और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।"

इस से इस बात की पुष्टि होती है कि बपतिस्मे का अर्थ हमेशा ''पानी में '' नहीं होता।

1 पतरस 3:21 की सही समझ इस विषय को ठीक रीति से समझने में हमारी सहायता करेगा।

1 पतरस 3:18 – 22
इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए : वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। उसी में उस ने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया। जिन्हों ने उस बीते समय में आज्ञा न माना जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज़ बन रहा था, **जिस में बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए।**

और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् **बपतिस्मा,** यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, **अब तुम्हें बचाता है;** (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)। वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दहिनी ओर बैठ गया ; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं।।

जहाज़ एक सुरक्षित स्थान था। जहाज़ यीशु मसीह का **चित्रण** करता है। परमेश्वर ने चुना कि कौन–कौन अन्दर जाएगा – जो उस पर विश्वास करते हैं। वह उन्हें अन्दर रखता है – अन्दर रखना, यीशु में बपतिस्मे का दृष्टान्त है।

उनको जहाज़ के अन्दर रखा क्योंकि :
उत्पत्ति 6:8–9 परन्तु **यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही**। नूह की वंशावली यह है। नूह धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था, और नूह परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा।

जहाज़ में प्रवेश करने के बहुत पहले से नूह धर्मी पुरुष था और परमेश्वर के साथ–साथ चलता था। जहाज़ ''यीशु में '' का चित्रण करता है, यीशु में बपतिस्मा क्योंकि नूह ने विश्वास किया।

वे ''**पानी के द्वारा बच गए**'' क्योंकि उनको जहाज़ में रखा था – यीशु में। पानी ने उनको नहीं बचाया परन्तु जहाज़ – यीशु मसीह के चित्रण – ने उन्हें बचाया और इसी कारण उन्हें ''**पानी के द्वारा** '' सुरक्षित बचा लिया।

पानी परमेश्वर का दण्ड था। वे दण्ड में से निकल आए क्योंकि वे जहाज़ में थे, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हम ''यीशु में '' हैं (रोमियों 6:3 ; गलातियों 3:27) और हम भी दण्ड में से निकल आएंगे।

''**बपतिस्मा, ...अब तुम्हें बचाता है**''

हमें आने वाले दण्ड से **यीशु में बपतिस्मा** (जहाज़) बचाता है, जिसका दृष्टान्त **पानी में हमारा बपतिस्मा** है। यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा ... उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है(जो पानी करता है, वो नहीं) , परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है। ''यीशु में''हमरे विश्वास के कारण हमारे पास शुद्ध विवेक है, हम उसके साथ मर गए और उसके पुनरुत्थान में जिलाए भी गए ताकि हम ''नए जीवन की सी चाल चलें''।

तथा पानी का बपतिस्मा इन सब के दृष्टान्त के रुप में है। यह हमारे उद्धारकर्त्ता के प्रति आज्ञापालन का हमारा पहला कदम है, वह जो हमें इस संसार में पाप के द्वारा हुई अपवित्रता से (जो शैतान को आक्रमण करने की अनुमति देता है) बचाने वाला हमारा प्रभु भी है।

इसी कारण यीशु ने कहा, (मरकुस 16:16) ''जो विश्वास करे (विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया गया) और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा (नरकदण्ड और इस संसार के दूषण दोनो से), परन्तु **जो विश्वास न करेगा** वह दोषी ठहराया जाएगा। ''

अनन्त मृत्यु का दोषी ठहराया जाएगा, जिससे पानी का बपतिस्मा बचा नहीं सकता।

अनन्त जीवन – सत्य पर विश्वास करने पर निर्भर करता है। (यह धर्मी ठहराया जाना है) पानी का बपतिस्मा (आज्ञाकारिता) इस संसार में पाप की अपवित्रता और भ्रष्टाचार से (जो शैतान को अवसर देता है) हमें बचाता है।

अतः ''क्रूस पर लटके अपराधी '' ने विश्वास किया और इसी कारण अनन्त जीवन को प्राप्त किया परन्तु उसका पानी में बपतिस्मा नहीं हुआ था। उसको इस संसार की अपवित्रता से बचने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वह इस संसार को त्याग रहा था।

पानी का बपतिस्मा **इस संसार में हमारे उद्धार के साथ बन्धा है, न कि अनन्त जीवन और हमारे धर्मी ठहराए जाने के साथ**। इस संसार की भ्रष्टता और दुष्ट शक्तियों से पानी का बपतिस्मा हमारा छुटकारा है और उसमें आज्ञाकारिता है तथा यह कि हम ''मसीह के साथ क्रूस पर चढ़े'', मर गए। और मरा हुआ व्यक्ति पाप नहीं करता।

इसी का समानान्तर हम 1 कुरिन्थियों 10:2 में पाते हैं :

''और सब ने बादल में, और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया। ''

मिस्र छोड़ने से पहले, इस्राएलियों का फसह के मेमने के लहू से धर्मी ठहराए जाने का प्रमाण वह बादल था, ठीक उसी प्रकार जैसे नूह ने बाढ़ आने से पहले अनुग्रह पाया था।

परन्तु इस्राएल को फ़िरौन के हाथों से छुड़ाए जाने की भी आवश्यकता थी। अतः जब उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी और पानी में कदम रखा उनका समुद्र में बपतिस्मा हुआ और वे अपने पृथ्वी के स्वामी से स्वतन्त्र कर दिए गए।

केवल यीशु के नाम में बपतिस्मा

वे लोग जो **केवल यीशु के नाम में बपतिस्मे** की शिक्षा को ले कर आते हैं वे विश्वासियों से उनके ''शुद्ध और स्पष्ट विवेक'' को अपने छल और झूठी शिक्षाओं से चुरा रहे तथा नष्ट कर रहे हैं।

सबसे पहले :
इस से कोई फर्क नहीं पड़ता कि ''बपतिस्मा दे रहा'' व्यक्ति क्या कह रहा है – मुख्य बात यह है कि ''बपतिस्मा ले रहा'' व्यक्ति क्या विश्वास करता है।

> परमेश्वर हृदय को देखता है (1 शमूएल 16:7; रोमियों 8:27 ; 1 थिस्सलुनीकियों 2:4)। यदि परमेश्वर सच्चा विश्वास नहीं देखे तो इस से कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या बोला गया क्योंकि व्यक्ति का बपतिस्मा नहीं हुआ वह केवल भीगा है। यदि परमेश्वर सच्चा विश्वास देखे तो इस बात का फर्क नहीं पड़ता कि उसका बपतिस्मा : यीशु के नाम में हुआ है या पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में हुआ या फिर कुछ भी नहीं बोला गया, यह उस व्यक्ति के विश्वास और आज्ञा पालन के कारण सच्चा बपतिस्मा है।

इसलिए जो कुछ कहा जाता है वह परमेश्वर के लिए नहीं परन्तु वहां खड़े लोगों के लिए होता है। उदाहरण के लिए :

यूहन्ना 11:41–44
तब उन्हों ने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है। और मै जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु **जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा,** जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है। यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ।

दूसरी बात :

- ✏ यीशु को सारा आदर और महिमा देने से **पिता** को प्रसन्नता होती है।
  कुलुस्सियों 1:15– 19 फिलिप्पियों 2:9
- ✏ पिता को सारा आदर और महिमा देने से **पुत्र** को प्रसन्नता होती है।
  यूहन्ना 8:29 ; 14:13 ; 17:4
- ✏ पिता और पुत्र को सारा आदर और महिमा देने से **पवित्र आत्मा** को प्रसन्नता होती है।
  यूहन्ना 16:13–15
- ✏ **यीशु** पवित्र आत्मा को आदर देते हैं। लूका 12:10

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में ईर्ष्या वाली कोई बात नहीं है। यदि किसी व्यक्ति का बपतिस्मा यीशु के नाम से होता है तो पिता और पवित्र आत्मा दोनो प्रसन्न होते हैं (यूहन्ना 16:23–24)।

तीसरा :

यीशु के नाम से बपतिस्मा देना, पिता के नाम से बपतिस्मा है, यदि बोलें या न बोलें, दोनो एक हैं।

यूहन्ना 10:30 ; 14:10–11 ; 17:21–23

वह जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हैं तथा जिसको बनाए रखने के लिए उन्होंने अपने आप को दे दिया : उनका एकत्व और अभिन्नता, उसी को मसीह की देह में बटवारा और अलगाव लाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

चौथा :

प्रेरितों के काम 2:38 पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये **यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले**; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

प्रेरितों के काम 10:48
और उस ने आज्ञा दी कि उन्हें **यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए** : तब उन्हों ने उस से बिनती की कि कुछ दिन हमारे साथ रह।

"**के नाम में** "का अर्थ है : के अधिकार के द्वारा

उदाहरण : "कानून के नाम में खोलो" । यह व्यक्ति सरकार "**के अधिकार में** " में बोल रहा है तथा **उसे कहा गया है कि ऐसा करे** और इसके लिए उसे अधिकार भी दिया गया है।

जब यीशु ने हमें बताया कि कैसे हमें बपतिस्मा देना है तो वह कोई नियम या सूत्र नहीं परन्तु यह कि **किस अधिकार** के द्वारा हमें यह कार्य करना है।

मत्ती 28:18–20
यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का **सारा अधिकार मुझे दिया गया है**। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें **पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से** बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।।

इसलिए चाहे हम "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से " कहें या "यीशु के नाम से ", यह परमेश्वर (यीशु परमेश्वर है) के **"अधिकार"** से है जो हम कहते हैं।

उदाहरण :

प्रेरितों के काम 3:6 तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूं: **यीशु मसीह नासरी के नाम से** चल फिर।

अभिप्राय – यीशु मसीह के अधिकार से

प्रेरितों के काम 4:18 तब उन्हें बुलाया और चितौनी देकर यह कहा, कि **यीशु के नाम से** कुछ भी न बोलना और न सिखाना।

वे यीशु के अधिकार से बोल रहे थे।

उसने कहा : " इस संसार में जाओ और जाति – जाति के लोगों में प्रचार ... "

प्रेरितों के काम 5:40 तब उन्हों ने उस की बात मान ली; और प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया ; और यह आज्ञा देकर छोड़ दिया, कि **यीशु के नाम से** फिर बातें न करना।

अभिप्राय – यीशु मसीह के अधिकार से

प्रेरितों के काम 9:27 परन्तु बरनबास उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उन से कहा, कि इस ने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा, और इस ने इस से बातें कीं; फिर दमिश्क में इस ने कैसे हियाव से **यीशु के नाम का** प्रचार किया।

प्रेरितों के काम 16:18 वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस दुःखित हुआ, और मुंह फेरकर उस आत्मा से कहा, मैं तुझे **यीशु मसीह के नाम** से आज्ञा देता हूं, कि उस में से निकल जा और वह उसी घड़ी निकल गई।।

अभिप्राय – यीशु मसीह के अधिकार से

अतः पानी का बपतिस्मा :

1. "मसीह में " हमारी मृत्यु , गाड़े जाने और जी उठने का चित्रण है।

2. आज्ञा पालन का हमारा पहला कार्य है। यह आज्ञाकारिता है जो हमें इस संसार की अपवित्रता से बचाता है और शैतान के हमले से भी।